संजीवनी - कितना सच कितना मिथक

डॉ. किशोर पंवार

देश की प्रतिष्ठित विज्ञान पत्रिका करंट सांइस के अगस्त अंक में एक लेख छपा है *'इन सर्च ऑफ संजीवनी'*। यह के.एन. गणैशय्या, आर. वासुदेव एवं आर. उमाशंकर का संयुक्त प्रयास है। यह खोजी प्रकृति का एक बहुत ही श्रेष्ठ कोटि का विश्लेषणात्मक लेख है। लेखकों ने रामायण में वर्णित संजीवनी बूटी की खोज का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बहुत ही सुन्दर एवं सराहनीय प्रयास किया है। हालांकि कुछ बिन्दु अभी भी ऐसे हैं जिन पर रोशनी डाली जाना बाकी है। जैसे संजीवनी का दीप्तिमान होना।

उक्त लेखकों का मत है कि यदि इस बात की ज़रा-सी भी संभावना है कि संजीवनी बूटी नाम का कोई पौधा या समूह था या है, तो इसे खोजा जाना चाहिए। संभावनाओं को तलाशना विज्ञान का एक महत्वपूर्ण काम है। संजीवनी के संदर्भ में यदि ऐसा नहीं किया गया तो हो सकता है कि हम ऐसी महत्वपूर्ण जड़ी-बूटी गवां दें। लेखकों ने उनके खज़ाने - एक हज़ार पौधों के डैटाबेस 'जैव सम्पदा' - में शुरुआती तौर पर 17 ऐसे पौधों को चुना जिनमें संजीवनी होने की सम्भावनाएं हैं। फिर उनमें से 6 पौधे चुने और अन्त में वे अपनी खोज में इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि केवल दो ऐसे पौधे हैं जिनमें संजीवनी के वर्णित गुण हैं। ऐसा पहला पौधा है *सिलेजिनेला ब्रायोप्टेरिस* और दूसरा *डेस्मोट्रायकम फिम्ब्रिएटम*।

पहला (*सिलेजिनेला*) एक सरल प्रकार का ज़मीनी पौधा है जो जैव विकास की प्रथम पायदान पर खड़ा है। दूसरा (*डेस्मोट्रायकम*) एक उपरिरोही ऑर्किड हैं जो विकास की सर्वोच्च पायदान का प्रतिनिधी है। छह में से इन दो पौधों के चुनाव का कारण इनका आवास है। चूंकि हनुमान को संजीवनी की तलाश में हिमालय पर्वत पर भेजा गया था अतः संजीवनी एक पहाड़ी पौधा ही होना

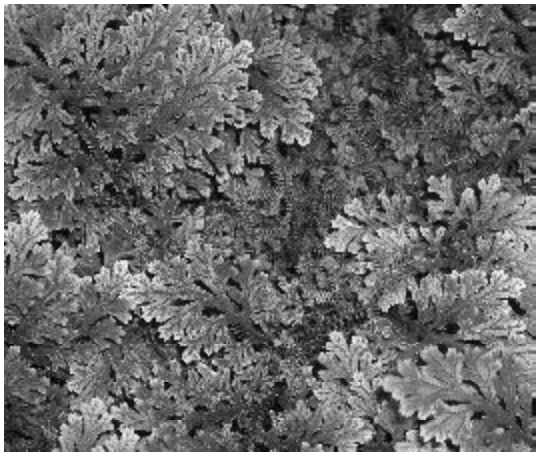

चाहिए, मैदानी या रेगिस्तानी नहीं। ये दोनों पौधे इस मापदण्ड पर खरे उतरते हैं। *सिलेजिनेला ब्रायोप्टेरिस* कटिबंधीय जंगलों के पहाड़ी क्षेत्रों में मिलता है (जैसे अरावली पर्वत माला और विशेषकर मध्यप्रदेश के बस्तर, बिलासपुर और होशंगाबाद ज़िले में)। वहीं *डेस्मोट्रायकम* पश्चिमी घाट और उत्तर पूर्वी राज्यों की पहाड़ियों पर उगता है। ये दोनों पौधे औषधीय गुणों से भरपूर भी हैं। *सिलेजिनेला* गर्मी और लू से बचाता है।

रामायण के वर्णन से स्पष्ट होता है कि राम-रावण युद्ध के दौरान शक्ति लगने से लक्ष्मण मूर्च्छित हो गए थे और संजीवनी बूटी ने उन्हें वापस होश में ला दिया था। इससे यह स्पष्ट है कि वे मृत नहीं केवल मूर्च्छित हुए थे। अतः संजीवनी ऐसी बूटी/औषधि है जो मूर्च्छा तोड़कर पुनः होश में ला दे। यानी लगभग पुनः जीवित करने के गुण वाली बूटी।

डॉक्ट्रीन ऑफ सिग्नेचर

यह एक पुराना सिद्धांत है जिसके अनुसार जो पौधा या पौधे का हिस्सा मानव शरीर के अंग से समानता

रखता है उसमें उसे ठीक करने का गुण होता है। यह सिद्धांत विदेशों में काफी समय तक माना जाता रहा था, विशेषकर हर्बलिस्ट के बीच। जैसे बादाम आंख जैसी दिखती है तो यह आंख के रोग में लाभकारी होगी। अखरोट हूबहू दिमाग की रचना जैसा दिखता है अतः यह याददाश्त बढ़ाने में उपयोगी होगा या तंत्रिका विकारों को ठीक करेगा। उसी तरह लिवरवर्ट्स लीवर सम्बंधी रोगों में उपयोगी माने गए हैं। एक और पौधा है जिसे मैंने अक्सर अपने बगीचे से लोगों को ले जाते देखा है, नाम है हाड़-जोड़ यानी हड्डी जोड़ने वाला। अस्थिभंग की अवस्था में उसका पुल्टिस बांधते हैं। पौधा ऐसा दिखता है जैसे छोटी हड्डियां जोड़ दी गई हैं। वानस्पतिक नाम है *वायटिस क्वाड्रागुलेरिसा*। यहां एक और पौधे मेन्ड्रेक यानी जिनसेंग का ज़िक्र लाज़मी है। इस पौधे की जड़ें हूबहू मानवाकार होती हैं - सिर, पैर हाथ, धड़, और तो और उंगलियों भी दिखाई देती हैं इसकी जड़ों पर। यह पौधा पूरे शरीर के उपचार में उपयोग किया जाता है। यही है डॉक्ट्रीन ऑफ सिग्नेचर। इसी आधार पर संजीवनी को देखा जाए तो उस पौधे में स्वयं पुनर्जीवित होने का गुण होना चाहिए। अतः यह माना जा सकता है कि यह मूर्च्छा तोड़ने अर्थात पुनः जीवन के गुण लाने में सहायक होना चाहिए।

पुनर्जीवित होने का गुण

सिलेजिनेला की कई प्रजातियां शुष्क स्थानों पर उगती हैं और इन्हें रीसरक्शन प्लांट कहा जाता है। पानी की कमी में ये लिपटकर एक हल्की-भूरी गेंदनुमा रचना बना लेते हैं और नमी मिलते ही ये पुनः खुलकर एकदम ताज़े हरे हो जाते हैं जैसे ये कभी सूखे ही न थे। यह चमत्कारी गुण उन्हें विशिष्ट बनाता है। उसे कुछ जगह पर डायनोसौर पौधा भी कहते हैं क्योंकि यह लगभग मृत विलुप्त अवस्था से पुनः जीवित हो उठता है।

सिलेजिनेला की कई प्रजातियां, जैसे *सिलेजिनेला लेपिडोफिला*, *सिलेजिनेला ब्रायोप्टेरिस* आदि दुनिया के कई देशों में एक अजूबे की तरह बेची जाती हैं। यूएस में 1921 से इसे बेचा जाता है। कुछ लोग उसे *फाल्स रोज़* कहते हैं तो कुछ *स्टोन फ्लावर*। *सिलेजिनेला* के पुनः जीवित होने का यह गुण ही उसे संजीवनी बूटी मानने को विवश करता है। एक पौधा लगभग मृत अवस्था में पड़ा रहे, जड़ से उखड़कर भी पुनः पानी मिलते ही ज़िंदा हो जाए, क्या यह कम आश्चर्य नहीं? जो पौधा स्वयं पुनः जीवित हो जाता है वह दूसरे किसी जीव में जान क्यों नहीं डाल सकता?

इस संदर्भ में शाह और उनके साथियों द्वारा 2005 में किए गए शोध में *सिलेजिनेला* का रस चूहे की कोशिकाओं को ऑक्सीकारक तनाव एवं तंत्रिका विकार से ठीक कर देता है। मूर्च्छा एक तरह का तंत्रिका विकार ही है। शोध की दिशा से यह संकेत तो मिल ही रहा है कि ऐसा कोई पौधा हो सकता है जो तंत्रिका विकार को ठीक कर सकता है। चूहे की कोशिका और मानव कोशिकाएं समान ही होती हैं।

सिलेजिनेला ऐसा पौधा है जो बिलकुल सूखी अवस्था से पानी मिलते ही ज़िंदा हो जाता है, सांस लेने लगता है। ऐसे पौधों को पायकिलोहायड्रिक कहते हैं। हमारे यहां कई धार्मिक मेलों में *सिलेजिनेला* संजीवनी बूटी के नाम से बेचा जाता है। बेचने वाले उनके गट्ठर इकट्ठे कर लाते हैं और पानी भरी शीशियों में रखकर बेचते हैं। वे उसके औषधीय महत्व के बारे में कुछ नहीं कहते। सिर्फ इतना कहते हैं कि यह संजीवनी बूटी है। वैसे पुनः जीवित होने का यह गुण केवल *सिलेजिनेला* ही नहीं अन्य कई ब्रायोफाइट्स एवं फर्न्स में भी पाया जाता है।

संजीवनी बूटी की तलाश में मैंने आर्युवेद के एक प्रमुख ग्रंथ भाव मिश्र द्वारा रचित *भाव प्रकाश निघंटु* तलाशा। इस पूरे ग्रंथ में संजीवनी नाम की किसी बूटी का ज़िक्र नहीं है। हां, *सिलेजिनेला* की जानकारी ज़रूर है परन्तु उसका हिन्दी नाम हत्था-जोड़ी है। इस क्षुद्र वनस्पति के बारे में लिखा है कि यह पथरीली सूखी और खुली जगहों पर पाई जाती है। सुबह यह ताज़ी हरी होती है और ज़मीन पर फैली रहती है। परन्तु दिन चढ़ने पर क्रमशः संकुचित होती जाती है और यदि उसे उखाड़कर

पानी में डाल दें तो शीघ्र ही फैलकर ताज़ी हरी हो जाती है। गुणों से तो यह संजीवनी ही लगती है - अंग्रेज़ी नाम तथा उपयोग से भी। परन्तु इसे संजीवनी नाम क्यों नहीं दिया गया यह आश्चर्य का विषय है। इसे वात विकार, अपस्मार, सूखारोग, आर्तक विकार, रक्तपित्त, धातु दौर्बल्य और प्रसूति में उपयोगी बताया गया है।

जैसा कि करंट साइन्स के लेख में ज़िक्र है, संजीवनी एक पौधा भी हो सकता है या पौधों का समूह भी। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि पिछले महीनों पातंजली योग पीठ हरिद्वार के महामंत्री आचार्य बालकृष्ण जी ने संजीवनी बूटी धोलागिरी पर्वत से खोज लिए जाने की घोषणा बड़े ज़ोर-शोर से मिडिया में की थी। उनके अनुसार संजीवनी बूटी चार पौधों का समूह है - रामायण में भी इन्हें चार कहा गया है। उनमें एक को स्पष्ट तौर पर मृत संजीवनी कहा गया है। ये चार बूटियां हैं:

1. विशल्यकरणी - ऐसी बूटी जो शल्य को बाहर कर दे।
2. सुवर्णकरणी - त्वचा के रंग को पुनः एक सार कर दे।
3. मृत संजीवनी - मूर्च्छा तोड़ने वाली।
4. संधानकरणी - चोट को शीघ्र ठीक करने वाली।

पातंजली योग पीठ द्वारा खोजी गई एक बूटी है फेनी कमल (*सासूरिया बेसीवेरा*) जो ब्रह्म कमल का बहुत करीबी सम्बंधी है। एक औषधि फर्न जैसी दिखती है जो *सिलेजिनेला* हो सकती है। तीसरी *प्लूरियोस्पर्मम कोरिएंडोल* है। इनकी खोज की सत्यता तो इनकी उपयोगिता सिद्ध होने पर ही पता चलेगी।

विशल्यकरणी का ज़िक्र भावप्रकाश निघंटु में भी है। यह विंध्याचल पर्वत श्रेणियों एवं मैदानी इलाकों में मिलती है। तेलगु में उसे अग्निशिखा कहा गया हैं। दीप जैसी लौ वाली। इसका उपयोग सुख प्रसव, गर्भ घातक एवं बिच्छू के काटने पर करते हैं। इससे वेदना कम होती है, अतः दर्दहर है। विषहर है। शरीर से किसी वस्तु को बाहर निकालने वाली है अर्थात् संकोचन का गुण उसमें हैं। वानस्पतिक नाम है *ग्लोरिओसा सुर्पना*।

संधानकरणी या संधानी के बारे में यहां एक घटना का ज़िक्र उपयोगी होगा जो मैंने बार-बार सुनी है। घटना कोई 60-65 वर्ष पुरानी है। बागली के रहवासी श्री एस.आर. व्यास ने बताया था कि अक्टूबर महीने में एक आदिवासी गन्ना छील रहा था। अचानक दराते से उसकी उंगली इतनी कट गई कि लगभग लटक ही गई थी। बागली से देवास के रास्ते में वह खून का बहना रोकने के लिए रास्ते भर जो भी पत्तियां मिली उन्हें तोड़-तोड़ कर उंगली पर लगाता रहा। देवास आकर वह अस्पताल गया तब डॉक्टर ने उसे अपनी उंगली दिखाने को कहा। पत्तियां हटाकर जब उंगली देखी तो वह लगभग जुड़ चुकी थी।

इसी तरह धार में टेकरी के नीचे फौजी कैम्प लगा था। वहां एक व्यक्ति को लकड़ी काटते हुए कुल्हाड़ी जांघ पर लग गई। घाव बहुत गहरा था। फौज वाले उसे तुरंत स्ट्रेचर पर लिटा कर नीचे अपने केंप में लाए। उसी बीच उसके परिजन टेकरी से नीचे उतरते समय रास्ते भर तरह-तरह की पत्तियों खून बहना रोकने के लिए लगाते रहे। बताते हैं कि नीचे आने तक खून रिसना बंद होकर उसका घाव लगभग भर चुका था। फौज के डॉक्टर आश्चर्यचकित रह गए। उस वनस्पति की खोज दो-तीन दिन तक अंग्रेज़ डॉक्टर ने करवाई पर उन्हें वह नहीं मिली। खून बहना रोकने के लिए इस क्षेत्र के आदिवासी आज भी घावभरणी नाम की वनस्पति का उपयोग करते हैं। बरसात में उगने वाली यह एक आम वनस्पति है। वैज्ञानिक इसे *ट्रायडेक्स प्रोकम्बेन्स* कहते हैं। इस वनस्पति का भी जिक्र भाव प्रकाश निघंटु में नहीं है। ये लोक वनस्पति विज्ञान की विरासत है। यही तो एथ्नो बॉटनी है।

संजीवनी जैसी बूटियों की खोज आदिवासियों के बीच जाकर ही संभव है। उनके पास सदियों के अनुभव का अनमोल खज़ाना है। इसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अच्छी तरह से खंगालना अभी बाकी है। ***(स्रोत फीचर्स)***